सत्यमेव जयते

दक्षिणी

वार्षिक पत्रिका 2024

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महानिदेशक लेखापरीक्षा कार्यालय

दक्षिण रेलवे

चेन्नै.03

- टिप्पणियां हिन्दी में लिखिए ।
- मसौदें हिन्दी में कीजिए ।
- शब्दों के लिए अटकिए नहीं ।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।
- अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए ।

अनुक्रमणिका

क्रम सं	विषय	रचनाकार (सुश्री/श्री)	पृष्ठ सं
1.	संदेश	महानिदेशक लेखापरीक्षा	3
2.	संदेश	उपनिदेशक/प्रशासन	4
3.	संदेश	उपनिदेशक/कार्य एवं भंडार	5
4.	संपादक की कलम से...	हिंदी अनुभाग	6
5.	सतत जीवन हेतु हरित बनना	निदेशक/प्रशासन(सेवानिवृत्त)	7
6.	सांप्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकता	मानवेंद्र कृष्ण	9
7.	भारतीय रेलवे - देश की जीवन रेखा	गौरव वत्स	10
8.	एक खरीदो और तीन पाओ	ई चन्द्रशेखरन	12
9.	लुप्त होती हरी रेल	पी पी जनार्दनन	14
10.	रोशनी	स्वस्तिका कुमारी	16
11.	पालक्काड़ किला	प्रदीप कुमार	18
12.	प्रयास करो तमाशा मत देखो	मनीष कुमार	19
13.	हौले-हौले ज़िन्दगी	निखिल चौहान	20
14.	बिहार	अविरल कुमार	21
15.	वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप	प्रिंस अग्रवाल	22
16.	सपनों की उड़ान	राजदीप सिंह	23
17.	स्क्रीन पर उँगलियाँ चलाते-चलाते...	गौरव वत्स	24
18.	संस्कृत और तमिल	आकाश चपराना	25
19.	माँ	रोहित बाकर	26
20.	पिता	आशीष मीना	27
21.	मैं भारत की नारी	आरती कुमारी भांखड़ीवाल	28
22.	हमारा भारत	सुनील कुमार	29
23.	माँ	रविषेक कुमार तेजस	30
24.	माँ	जितेन्द्र	31
25.	बेटे की विदाई	रोहित राज	32
26.	भारत रत्न (2024)	रोहित राज	33
27.	गृहिणी	दामिनी नागरे	35

* कवरपेज का डिजाइन श्री के. कालीस्वरन(बकाक/प्रशा.) द्वारा किया गया ।
* बैकपेज का डिजाइन कु. स्नेहाराज पुत्री श्री जितेन्द्र(बकाक/समन्वय) द्वारा किया गया ।

महानिदेशक लेखापरीक्षा कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै 600003

दक्षिणी

ई पत्रिका-वार्षिक 2024

संरक्षक

श्रीमती अनिम चेरियन

महानिदेशक लेखापरीक्षा

श्री एस सामिदुरै

उपनिदेशक/प्रशासन

सुश्री एस अरुणा

उपनिदेशक/कार्य एवं भंडार

***

पत्रिका समिति

श्रीमती जे. निर्मला

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

श्रीमती जी. वी. सूर्यप्रभा

हिन्दी अधिकारी

सुश्री प्रीति साव

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती दामिनी नागरे

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री के. कालीश्वरन

ब.का.क/प्रशासन

संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नही है।
रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार होते हैं।

संदेश

हमारे कार्यालय के इस अंक के प्रकाशन के सुअवसर पर मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है । मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि यह कार्यालय ई पत्रिका-'दक्षिणी' प्रकाशित करने जा रहा है। लेखन एक सुखद अनुभव है। कार्यालय के अपने काम-काज में से कुछ समय निकालकर अपने विचारों को कागज पर उतारना मन को संतुष्ट करता है। हर व्यक्ति का रचनात्मक कौशल अलग-अलग होता है। पदधारियों के अपने-अपने अनुभवों को आदान-प्रदान करने के लिए यह पत्रिका एक मंच है। मैं सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के लिए योगदान दिया है। राजभाषा हिंदी न केवल हमारी सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है, बल्कि हमारे राष्ट्रीय एकता और समृद्धि का भी मूल अंग है । हम सब मिलकर अपनी राजभाषा के प्रति अपनी प्रेरणा और समर्थन का प्रदर्शन करें । राजभाषा के प्रयोग संबंधी संवैधानिक दायित्वों के अनुरूप अपने दैनिक कामकाज हिंदी में करते हुए, इस पत्रिका को जारी किया जा रहा है। पत्रिका समिति सहित सभी रचनाकारों को बधाई। मेरी ओर से भविष्य के सभी प्रयासों के लिए शुभकामनाएं।

अनिम चेरियन
महानिदेशक लेखापरीक्षा

संदेश

हमारे कार्यालय की वार्षिक पत्रिका "दक्षिणी" प्रकाशित करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। विभागीय पत्रिकाएं कार्यालय का दर्पण होती हैं। राजभाषा के प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का बहुत योगदान रहता है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं के द्वारा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति लगाव तथा स्नेह प्रदर्शित होता है।

हिंदी न केवल भाषा है बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विविधता की भी परिचायक है। निज भाषा में अभिव्यक्त (लिखित व मौखिक) विचार जितने अर्थपूर्ण रूप से अभिव्यक्त होते हैं उतने और किसी अन्य भाषा में नहीं हो सकते। कार्यालयीन कार्यों में पूर्ण रूप से हिंदी के उपयोग से न केवल कार्यकुशलता में वृद्धि होगी बल्कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को भी सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

इस पत्रिका में संकलित रचनाएँ इस कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों की सृजनशीलता का अनूठा संगम है। मैं हिंदी के इन नवांकुर रचनाकारों को प्रोत्साहन देते हुए पाठकों तक इतनी सुंदर पठनीय सामग्री पहुँचाने के प्रयास के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

श्री एस. सामिदुरै
उपनिदेशक/प्रशासन

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि विभागीय वार्षिक पत्रिका "दक्षिणी" प्रकाशित होने जा रही है । कार्यालय के कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रतिभाओं का आगे आना जरुरी है ताकि केंद्र सरकार की नीतियों, आदेशों और वार्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रसारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में संगठित होकर काम किया जा सके ।

राजभाषा के प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का बहुत योगदान रहता है । पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं के द्वारा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति प्रेम व सम्मान प्रदर्शित होता है । विभागीय पत्रिकाओं की अवधारणा, कार्मिकों के बीच रचनात्मक लेखन एवं अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन करना और एक सार्थक मंच प्रदान करना है। आशा है कि "दक्षिणी" अपनी सार्थकता को सदा बनाए रखेगी ।

पत्रिका परिवार के संपादक एवं प्रबंधक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए, मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करती हूँ, साथ ही सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

सुश्री एस. अरुणा
उपनिदेशक/कार्य एवं भंडार

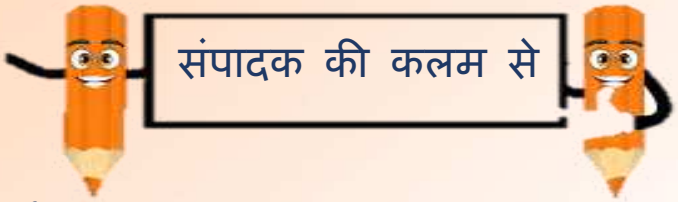

आज के गतिशील कार्यस्थल में, विविधता सफलता की आधारशिला है। एक संगठन के रूप में हमारी यात्रा विविध दृष्टिकोणों और अनुभवों से समृद्ध हुई है जो इस संगठन के प्रत्येक सदस्य हमें, उनकी संस्कृति, भाषा, भोजन और मूल्यों को समग्र रूप से लाते हैं। भारत विविधता में एकता का देश है, हम एक समावेशी वातावरण को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता का भी जश्न मनाते हैं जहाँ हर आवाज़ सुनी जाती है।

हिंदी, भारत की आधिकारिक भाषा होने के नाते, हमारी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक भी है। हमें इसका संरक्षण और सम्मान करना चाहिए। राजभाषा के माध्यम से, हमारी भावनाओं, विचारों और गहरी अभिव्यक्तियों को समझना और ठीक से साझा करना संभव है। यह न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक समृद्धि का साधन है, बल्कि राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में एक मजबूत और सुरक्षित भारत के निर्माण में भी योगदान देता है।

हमारा कार्यालय, भारत के विभिन्न कोनों से नियुक्त पदधारियों का स्वागत करते हुए प्रसन्न है, जिसमें राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, सबसे प्रमुख मिज़ोरम आदि शामिल है। यह विविधता केवल विभिन्न पृष्ठभूमि की ही नहीं बल्कि यह विभिन्न सांस्कृतिक अनुभवों से अद्वितीय दृष्टिकोणों की भी है। हमारी विविधता ही अलग दृष्टिकोण लाती है जो रचनात्मकता को जन्म देती है।

हमारे कार्यालय की पत्रिका 'दक्षिणी' के माध्यम से हमें राजभाषा के महत्व को प्रदर्शित करने का एक बेहतरीन अवसर मिला है। आपसी विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए यह मंच हमें एक अच्छा अवसर प्रदान करता है । कार्यालय की गतिविधियां, हमें इस पत्रिका के माध्यम से अवगत कराती है । भारतीय संस्कृति और भाषाओं का सम्मान करना हमारी पहचान है और इसमें राजभाषा का महत्व बहुत महत्वपूर्ण है। शासन की भाषा राजभाषा पूरे भारत की मातृभाषा है। यह हमारे संस्कार, विचार और संस्कृति की स्थापना को बढ़ाती है। इस कार्यालय के विभिन्न क्षेत्रों में हमें राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। हमें सम्मान, संवाद और सहयोग की भावना को बढ़ाने के लिए हर कार्यक्रम में राजभाषा का सम्मान करना चाहिए। यह केवल भाषा का मामला नहीं है बल्कि हमारी एकता और एकजुटता का प्रतीक है।

अंत में, हम, आप सभी से अनुरोध करते हैं कि हमारे कार्यालय में राजभाषा को उचित स्थान दें और इसका प्रचार प्रसार करें।

आपके सहयोग और समर्थन की आशा के साथ।

हिंदी अनुभाग

सतत जीवन हेतु हरित बनना

सि. सुरेश
निदेशक/प्रशासन(सेवानिवृत्त)

पृथ्वी जीवों वाला एकमात्र ज्ञात ग्रह है। हम अन्य ग्रहों पर जीवन और अलौकिक प्राणियों के बारे में बात करते हैं, लेकिन आज तक हम केवल पृथ्वी पर ही जीवन के बारे में जानते हैं, और अब हम उस स्थिति में आ गए हैं जहां हमें पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने के नए तरीकों के बारे में सोचना होगा। पृथ्वी का जो वर्तमान स्वरूप है, वह लाखों वर्षों में विकसित हुई और यह सिद्ध हो चुका है कि मानव प्रजाति के विकसित होने से पहले भी जीवन था। मानव जीवन की शुरुआत स्पष्टतः ज्ञात नहीं है लेकिन पिछले 2000 वर्षों का मानव जीवन काफी अच्छी तरह से प्रलेखित है। किंतु समस्या यह है कि क्या अगले 1000 वर्षों के बाद भी मानव जीवन रहेगा? ऐसे सवाल मूलतः जीवनशैली के कारण उठते हैं। जीवाश्म ईंधन का निर्माण समय के साथ होता है जो लाखों वर्षों का होता है। लेकिन इंसानों ने 100 साल के अंदर ही इसका काफी अंश खत्म कर दिया है। अब डर है कि कहीं यह अगले सौ वर्षों में ख़त्म न हो जाये। औद्योगीकरण और विकास, पानी सोखने वाले स्पंज की तरह प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग कर रहे हैं। हमें इस बात का एहसास नहीं है कि प्रकृति को इन संसाधनों को फिर से भरने के लिए कई पीढ़ियों से अधिक की आवश्यकता होगी। तो अब विचार आता है कि हम विकास जारी रखते हुए जीवन को कैसे बनाए रख सकते हैं। इसी विचार ने 'सतत विकास' शब्दावली का निर्माण किया है।

अपने चारों ओर देखने पर हमें प्रकृति में दो प्रमुख रंग दिखाई देते हैं-हरा और नीला । हरा रंग भूतल पर पाया जाता है जो वनस्पति के कारण होता है और नीला रंग खुले आसमान व पानी की सतहों के कारण दिखाई देता है। इन दो रंगों को देखकर हमें संतुष्टि और तृप्ति की अनुभूति होती है लेकिन मानव जाति इन रंगों को नुकसान पहुंचा रही है। औद्योगीकरण और शहरीकरण पृथ्वी का चेहरा बदल रहे हैं। एक और गंभीर मुद्दा है- ग्लोबल वार्मिंग, इससे आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्र में हिमनद पिघल रहे हैं। जल स्तर बढ़ने से कई तटीय क्षेत्र डूब जायेंगे। हरित आवरण को बहाल करना और बढ़ाना पृथ्वी को नुकसान पहुंचाने से रोकने का एक प्रभावी तरीका है। यही कारण है कि पर्यावरण अनुकूल उपायों को भी हरे रंग से चिह्नित किया जाता है।

जंगल में बाघ और हाथियों को छत्र प्रजाति कहा जाता है, ऐसा इसलिए क्योंकि ये प्रजातियाँ अच्छी संख्या में होंगी तो अन्य प्रजातियाँ भी पनपेंगी। बढ़ी हुई वनस्पति कई शाकाहारी प्रजातियों के अस्तित्व में मदद करती है जो बदले में बाघों और अन्य मांसाहारी जानवरों के लिए भोजन प्रदान करती है। मनुष्य को यह याद रखने की आवश्यकता है कि मानव जाति तभी जीवित रह सकती है जब अन्य सभी प्राणी जीवित रहने में सक्षम होंगे। लेकिन अन्य

प्राणियों के लिए यह बात अलग है, मानव जाति के बिना भी, सभी प्राणी बेहतर तरीके से रह सकते हैं। मनुष्य प्राकृतिक जीवन का सबसे बड़ा विध्वंसक है।

इस आधुनिक दुनिया में प्लास्टिक मुख्य उपयोगी सामग्री बन गई है। यह न केवल एक औद्योगिक आवश्यकता है बल्कि रोजमर्रा के उपयोग में आने वाली सामान्य वस्तु बन चुकी है। टनों प्लास्टिक समुद्र में बह जाता है और विघटित होकर नैनो एवं सूक्ष्म कणों का निर्माण करता है। नमक, जो रोजमर्रा के उपयोग की वस्तु है, का एकमात्र स्रोत समुद्र है। लेकिन नमक प्लास्टिक कणों से दूषित होता जा रहा है और इस प्रदूषण को नग्न आंखों से भी नहीं देखा जा सकता । यह स्थिति हमें अपने आंतरिक अंगों को खतरे में डालते हुए निष्क्रिय तरीके से प्लास्टिक का उपभोग करने के लिए मजबूर करती है। कई वर्षों में, इसने कई बीमारियाँ पैदा कीं और प्राकृतिक जीवन को नष्ट कर दिया। खाद्य उद्योग प्लास्टिक का एक बड़ा उपभोक्ता है और इसलिए प्लास्टिक कचरे का निर्माता भी है।

आजकल फूड एग्रीगेटर्स के जरिए ऑनलाइन खाना मंगाना आम बात हो गई है। हमें इस बात का जरा भी एहसास नहीं है कि डिब्बाबंद भोजन से कितने किलो प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। एकल उपयोग प्लास्टिक सुविधाजनक तो लग सकता है लेकिन पर्यावरण के लिए एक अभिशाप है। आइए हम स्वयं के पुन: प्रयोज्य पात्रों में भोजन खरीदना और अपनी जरूरतों के लिए पानी की बोतल साथ रखना सीखें। इस तरह हम प्लास्टिक के उपयोग को रोक कर पृथ्वी को बचा सकते हैं।

जल जीवन का स्रोत है। यद्यपि पृथ्वी की सतह का 71% भाग पानी से ढका हुआ है, लेकिन सिर्फ 3% ही स्वच्छ और पीने योग्य है। इसमें से 2.5% पानी दुर्लभ और प्रयोग करने योग्य पानी केवल 0.5% ही है। इससे हमें सतर्क रहना चाहिए और जल संरक्षण तकनीकों को अपनाना चाहिए। घर में कपड़े धोने के बाद हम बचे हुए पानी को रख सकते हैं, जिसका उपयोग शौचालयों में फ्लशिंग के लिए किया जा सकता है। इसका मतलब है कि हम प्रतिदिन लगभग 30 लीटर ताज़ा पानी बचाएंगे जो कि एक परिवार द्वारा प्रति वर्ष लगभग 11000 लीटर ताज़ा पानी बचाने के बराबर है। यह वास्तव में जीवन के अस्तित्व के लिए एक बहुत बड़ी बचत है।

मनुष्य को छोड़कर सभी प्राणियों की आवश्यकता भोजन, जल और संतान रही है। लेकिन इंसानों के लिए, लगातार बढ़ती ज़रूरतें और जीवनयापन की आवश्यकताएं प्रकृति की कीमत पर पूरी होती हैं। प्रकृति के साथ रहना और प्रकृति पर बोझ न बनना, जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने का सबसे अच्छा तरीका है । आइए जीवन को बनाए रखने के लिए हरित बनें।

सांप्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकता

मानवेंद्र कृष्ण
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
बही/मुख्यालय/चेन्नै

दुनिया के सभी महान धर्म, मानव जाति की समानता, भाईचारें एवं सहिष्णुता के गुण को विकसित करते हैं।

- महात्मा गांधी

दुनिया में भारत के अलावा शायद ही कोई दूसरा देश हो जहाँ संस्कृति, धर्म, भाषा, परंपरा और समुदाय आदि की इतनी अधिक विविधता हो, हमारे देश में विभिन्न धर्मों के लोग सौहार्दपूर्वक रहते हैं, लेकिन कई बार ऐसा समय आता है जब सांप्रदायिक ताना-बाना बिगड़ जाता है, ऐसा तब होता है जब समाज में कुछ सांप्रदायिक ताकतें जैसे शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार और अन्य प्रकार के पीड़न हावी होने लगते हैं जिसके परिणामस्वरूप सांप्रदायिक सद्भाव बिगड़ जाता है। इस क्रम में, लोग अपने-अपने धर्मों और आस्थाओं के अनुसार जीते और सोचते हैं, और राष्ट्र की भलाई के बारे में सोचे बिना अपने स्वार्थ की पूर्ति करना चाहते हैं। ऐसी सोच खतरनाक है और आगे चलकर देश के विघटन का कारण बनेगी।

यह ठीक ही कहा गया है कि "एकजुट होकर हम खड़े रहते हैं लेकिन विभाजित होकर हम गिर जाते हैं"। जो राष्ट्र एकजुट नहीं होता वह ताश के पत्तों की तरह ढह जाता है। किसी देश को वास्तव में महान बनाने के लिए, एक-दूसरे के मतभेदों की समझ और एक-दूसरे की शक्तियों की सराहना होनी चाहिए। वर्तमान परिस्थितियों में हमारे सामने समस्या यह है कि इतने विविध लोगों के बीच राष्ट्रीय चेतना का माहौल कैसे जगाया जाए, इसलिए समय की माँग है कि फूट और असामंजस्य की ताकतों से लड़ें और राष्ट्रीय एकता और शांति की प्राप्ति के लिए लगातार काम करें। यदि हम राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव के सराहनीय लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें देश के व्यापक हितों के लिए अपने व्यक्तिगत मतभेदों को भुला देना चाहिए और राष्ट्रीय समस्या के प्रति एक साझा दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

सद्भाव छोटी चीजों को बड़ा बनाता है, इसके अभाव में बड़ी चीजें खराब हो जाती हैं।

- सल्लुस्त

मंज़िल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है।

भारतीय रेलवे - देश की जीवन रेखा

गौरव वत्स
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
सवारी डिब्बा कारखाना /शेल

जब हम कहते हैं कि "कर्म ही पूजा है", तो हम धीरे-धीरे यह समझते हैं कि हमारा काम अनगिनत तरीकों से सर्वोत्कृष्टता को प्राप्त करता है और अनगिनत जीवनों को स्पर्श करता है। कहा जाता है कि एक जीवन को बचाना मानवता को बचाने के समान है। इस संदर्भ में, रेलवे इंजीनियरिंग स्टॉफ के सही समय पर हस्तक्षेप के असाधारण प्रभाव की कल्पना करें, जिन्होंने 17 दिसंबर 2023 की रात को चेन्नै की ओर जा रही तिरुचेंदुर एक्सप्रेस में बैठे हुए 800 लोगों की जान बचा ली, जो तिरुचेंदुर रेलवे स्टेशन से शाम 8.30 बजे गुज़र रही थी।

17 दिसंबर 2023 को तिरुनेलवेली और ट्यूटिकोरिन जिलों में भारी बारिश और बाढ़ के बाद, ट्रेन यातायात बाधित हो गया था, क्योंकि कुछ खंडों पर ट्रैक टूट गए थे। रेलवे के कर्मचारी ने ध्यान दिया कि रेलवे ट्रैक को, एक टूटे हुए सिंचाई टैंक से बहते हुए पानी ने बहा डाला | यह देखते ही कर्मचारी ने तुरंत नियंत्रण कक्ष और आस-पास के स्टेशनों को सूचित किया और ट्रेन को तत्काल 9 बजे के आस-पास श्रीवैकुंठम रेलवे स्टेशन पर रोक दिया|

ओएचई पोल गिरने से सावधानी बरतते हुए रेलवे प्रशासन ने स्टेशन की बिजली काट दी | ऐसा करके होने वाली दुर्घटना को टाल दिया और ट्रेन में सवार 800 लोगों की जान बचाई । संदेश को संचारित करने में किसी भी प्रकार की देरी अत्यंत घातक होती । बादल फटने की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 12 किमी से अधिक दूरी तक मिट्टी और गिट्टी, कटाव के कारण सड़क बह गई थी।

कुछ 300 लोगों को एक पास के स्कूल में राहत केंद्र ले जाया गया। लेकिन 500 लोग फिर भी फंसे रह गए। यहां तक कि 18 दिसंबर 2023 को 16:40 बजे सुलूर बेस से उड़ान भरने वाला भारतीय वायुसेना का हेलिकॉप्टर भी प्रतिकूल मौसम की स्थिति और खराब रोशनी के कारण भोजन और राहत सामग्री नहीं पहुँचा सका । मदुरै मंडल के रेलवे कर्मचारी सबसे पहले श्रीवैकुंठम स्टेशन पहुंचे। तिरुनेलवेली से आरपीएफ टीम, 7 आरपीएफ स्टॉफ के अलावा 02 वाणिज्यिक पर्यवेक्षकों के साथ 18 दिसंबर को पानी की बोतलों, अन्य खाद्य पदार्थों के साथ

श्रीवैकुंठम के लिए रवाना हुई। परिवहन के साधनों जैसे ट्रक, जीप और अंत में लगभग 3 किलोमीटर तक बाढ़ के पानी में चलकर रेलवे कर्मचारियों ने यात्रियों को पानी और अन्य खाद्य सामग्री प्रदान की। इससे फंसे हुए यात्रियों में बचाव की बड़ी उम्मीद जगी। मानवता के अद्भुत प्रदर्शन में, पास के गाँव वाले, पुडुकुडी मेलुर के निवासियों ने, स्टेशन से 150 मीटर की दूरी पर स्थित, फंसे यात्रियों के लिए खाना बनाया और उन्हें खिलाया, साथ ही रेलवे सुरक्षा बल और राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF) टीम के पहुंचने तक उनकी देखभाल की । रेलवे टीम के पहुंचने के बाद एनडीआरएफ करीब 30 घंटे की मशक्कत के बाद स्टेशन पहुंची | वे तुरंत रेलवे सुरक्षा बल और तमिलनाडु अग्निशमन एवं बचाव सेवाओं के साथ निकासी प्रक्रिया में जुट गए।

19 दिसंबर के सूर्यास्त तक, स्टेशन से सभी 509 यात्रियों को निकाल लिया गया और बसों में उन्हें वांचीमनियाच्ची स्टेशन तक ले जाया गया, जहां चेन्नै के लिए एक विशेष ट्रेन तैयार की गई थी । फंसे हुए यात्री लगभग 3 किलोमीटर की दूरी तक घुटने के स्तर से नीचे पानी में चले और जिसके बाद रेलवे मेडिकल टीम द्वारा चिकित्सा सहायता प्रदान करने के बाद उन्हें बसों द्वारा मनियाच्ची स्टेशन तक ले जाया गया।

यह सब उस रेलवे इंजीनियरिंग स्टॉफ के एक सतर्क कार्य से शुरू हुआ, जिनकी कार्यकुशलता, समय पर हस्तक्षेप, पूरे रेलवे प्रशासन को कार्रवाई में लाया और अचानक पूरा रेलवे प्रशासन और सैकड़ों रेलवे कर्मचारी उनकी सहायता के लिए काम करने लगे। जब लोग अपने घरों में बैठकर आपदा के गुजरने का इंतज़ार कर रहे थे, तब रेलवे कर्मचारी सारी मुसीबतों के बावजूद, फंसे हुए लोगों को बचाने के लिए संघर्षरत थे |

शायद इसीलिए रेलवे को देश की जीवन रेखा कहा जाता है। शायद यही कर्तव्यनिष्ठा है जो हमें लोगों की मदद करने के लिए अपने कर्तव्य की पुकार से परे जाने के लिए प्रेरित करता है और जब हम अपना काम ईमानदारी से करते हैं तब समझ आता है , कि यह केवल एक नौकरी नहीं बल्कि मानवता की सेवा है। जैसा कि रे लूइस ने कहा, "महानता बहुत सी छोटी-छोटी चीज़ों को अच्छी तरह से करने को कहते है। " आइए हम सभी अपने हर काम में इस भावना को अपनाएं और सार्वजनिक जीवन में उत्कृष्टता का एक मापदंड स्थापित करें जो परिश्रम, ईमानदारी और करुणा की गहराई में निहित है।

समस्याओं के समाधान खोजने वाला व्यक्ति ही सफलताओं की सत्ता प्राप्त करता है।

एक खरीदो और तीन पाओ

ई चन्द्रशेखरन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
निरीक्षण/मुख्यालय/चेन्नै

'एक खरीदो और तीन मुफ्त पाओ', यह आज की आधुनिक विपणन प्रथाओं में उत्पाद प्रचार में उपयोग की जाने वाली एक बड़ी तकनीक है। यह एक महान कहानी है - अपराजिता नाम का एक महान राजा था । वह नेक व्यक्ति था और उसके राज्य के लोग उसकी देखरेख में बहुत खुश थे। उसके देश के लोग उससे बहुत प्यार करते थे और उसके महान गुणों के कारण उसका बहुत सम्मान करते थे।

एक दिन सुबह उसने देखा कि एक खूबसूरत औरत उसके महल से बाहर आई और उसने देखा कि वह जा रही है। उसने उन्हें रोककर पूछा, "जी माँ, आप कौन हो ? आप मेरा महल छोड़कर कहाँ जा रही हो? उसने उत्तर दिया - जी राजा, मैं धन की देवी हूँ , मैं एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रहती । हालाँकि, मैं आपके महल में लंबे समय तक रही, क्योंकि आप एक महान व्यक्ति थे। अब मेरे जाने का समय हो गया है क्योंकि मैं एक स्थान पर स्थायी रूप से नहीं रह सकती। राजा ने कहा, क्या ऐसा है? यदि आप मेरे महल में खुश नहीं हो तो आप जा सकती हो । देवी ने तुरंत महल छोड़ दिया । कुछ देर बाद राजा ने महल से एक और स्त्री को निकलते देखा और वह भी जा रही थी। राजा ने पूछा, जी माता, आप कौन हो ? आप मेरा महल छोड़कर क्यों जा रहे हो?" युवती बोली, राजन, मैं सद्गुण की देवी हूँ । मैं सदैव धन की देवी का अनुसरण करती हूँ । जैसे धन की देवी आपके महल से दूर जा रही है, वैसे ही मैं भी आपके महल को छोड़ने के लिए मजबूर हूँ । राजा ने उत्तर दिया, "जैसी आपकी इच्छा हो, माँ आप जा सकती हैं।"

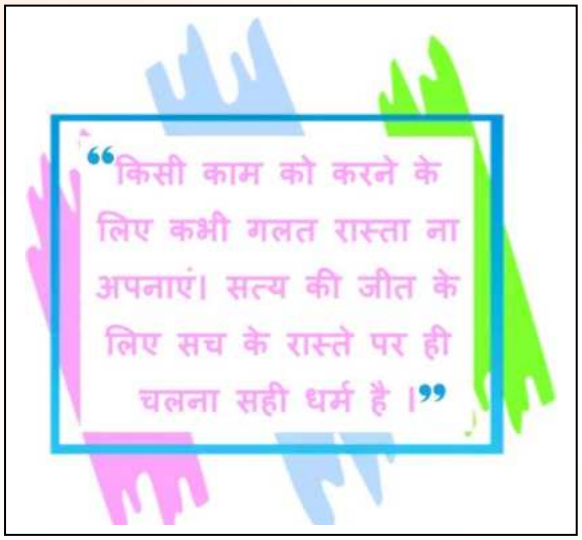

कुछ देर बाद राजा ने देखा कि एक और स्त्री उसके महल से निकलकर जा रही है। राजा ने टोककर पूछा, "आप कौन हो और आप कहाँ जा रहे हो?" उसने उत्तर दिया, "मैं न्याय की देवी हूँ, मैं वहाँ निवास करती हूँ जहाँ सद्गुण की देवी है, इसलिए मैं जा रही हूँ ।" राजा ने कहा, "ठीक है, मैं आपको नहीं रोकूंगा।"अंत में, राजा ने देखा कि एक और तेजस्वी महिला महल से बाहर आ रही है और जाने की तैयारी कर रही है।

राजा ने पूछा," माँ ! आप कौन हो और मेरा महल छोड़कर क्यों जा रही हो ?" तेजस्वी महिला ने उत्तर दिया, "मैं सत्य की देवी हूँ । मैं वहीं रहती हूँ, जहां मेरी बहनें हैं।" वह तुरंत उनके चरणों में गिर पड़ा और अश्रुपूरित नेत्रों से प्रार्थना की, "हे माँ, मुझ पर दया करो। जब बाकी तीनों देवियां चली गई तो मुझे चिंता नहीं हुई। लेकिन मैं आपके बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता ,मुझ पर कृपा करो , मुझे मत छोड़ो।" सत्य की देवी राजा के सम्मान और भक्ति से प्रभावित हुई और बोली, "ठीक है, मैं तुम्हारा राज्य नहीं छोड़ रही हूँ।"

चूँकि सत्य पीछे रह गया, न्याय की देवी राजा के पास लौट आई और बोली, "जी राजा, मैं वहीं रहती हूँ जहाँ सत्य की देवी रहती है। राजा ने कहा, "यह मेरा सौभाग्य है, माँ, आपका हार्दिक स्वागत है।" तभी पुण्य की देवी भी वापस आ जाती है और अपनी दोनों बहनों की ओर इशारा करके कहती है, मैं उनके बिना नहीं रह सकती, अतः मुझे भी यहीं रहने दो, अंततः धन की देवी वापस लौटी और बोली, "न्याय, सदाचार और सत्य के बिना धन अनर्थ हो जाएगा, इसलिए मैं भी लौट आई हूँ ।"

प्रसन्न होकर राजा ने देवियों को प्रणाम किया और कहा," हे माताओं! आइए, मेरे राज्य के लोग सत्य की महानता को समझें और समझें कि जहाँ सत्य होगा, वहाँ न्याय, सदाचार और धन अवश्य होगा।"

सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पराजित नहीं...

लुप्त होती हरी रेल

पी पी जनार्दनन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
पालक्काड़ मंडल

केरल का मलप्पुरम जिला नीलांबुर सागौन की लकड़ी के पेड़ों के लिए प्रसिद्ध है। उन्नीसवीं सदी के मध्य में ब्रिटिश लोगों ने इस क्षेत्र में सागौन की लकड़ियाँ लगायीं । कटे हुए पेड़ों को नीलांबुर से नजदीकी बंदरगाहों तक ले जाने के लिए, दक्षिण भारतीय रेलवे ने 1927 में शोरनूर जंक्शन से नीलांबुर तक ब्रॉड गेज़ रेलवे बिछाई। कई अन्य शाखा लाइनों की तरह , इस शाखा लाइन को भी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों द्वारा नष्ट कर दिया गया था । 1954 में भारतीय रेलवे द्वारा इस लाइन को फिर से बिछाया ।

अस्सी के दशक की शुरुआत में, परमानेंट वे इंस्पेक्टर, अंगदिप्पुरम की देखरेख में श्रमिकों द्वारा इस 66 किलोमीटर रेलवे लाइन के दोनों ओर, और पास की खाली जमीन पर पेड़ लगाए गये, मुख्य रूप से सागौन की लकड़ी। पिछले साल तक पूरे रास्ते में ट्रैक के दोनों ओर बड़े पेड़, मुख्य रूप से सागौन की लकड़ियाँ थीं। ट्रैक के दोनों ओर पेड़ों की शाखाएँ एक छत्रछाया बनाती थीं और रेल यात्रियों को हमेशा यह महसूस होता था कि वे किसी सुरंग से होकर यात्रा कर रहे हैं। कई रेलवे स्टेशनों की छतें पेड़ की शाखाओं के नीचे होती थीं और वसंत ऋतु में प्लेटफार्म फूलों से ढ़के रहते थे। पूर्व रेल मंत्री पीयूष गोयल ने एक बार इस खूबसूरत रेल लाइन के बारे में कुछ इस तरह ट्वीट किया था-"पालक्काड़ मंडल में सुरम्य नीलांबुर-शोरनौर लाइन को देखें, जो केरल की सबसे खूबसूरत रेल लाइन है जो पश्चिमी घाट के हरे-भरे जंगलों से होकर गुजरती है"।

नीलांबुर स्टेशन पर 202 साल पुराना शीशम का पेड़ (फोटो: पी पी जनार्दन)

दरअसल यह 2023 तक भारत की सबसे खूबसूरत लाइनों में से एक थी। इस लाइन में अन्य दुर्लभ पेड़ भी हैं। उनमें से एक नीलांबुर रोड स्टेशन पर 202 साल पुराना शीशम का पेड़ है।

लेकिन, विकास हमेशा पर्यावरण को प्रभावित करता है। रेलवे अब शत् प्रतिशत विद्युतीकरण के एक भाग के रूप में भारतीय रेलवे के बचे हुए गैर विद्युतीकृत खंड का विद्युतीकरण कर रहा है नीलांबुर लाइन अकेली इस विकास कार्य से नहीं बच सकती अन्यथा 66 किलोमीटर की रेलवे लाइन नेटवर्क से अलग हो जायेगी । ओवरहेड विद्युत उपकरणों के लिए मस्तूल खड़ा करने के लिए अब ट्रैक के दोनों ओर के पेड़ों को काटा जा रहा हैं। एकमात्र राहत यह है कि बिजली के खंभों से परे कई क्षेत्रों में अभी भी पेड़ उपलब्ध हैं। 202 साल पुराना विशाल शीशम का पेड़ भी अछूता है ।

बेशक, इलेक्ट्रिक ट्रेनें पर्यावरण के अनुकूल, प्रदूषण मुक्त और ऊर्जा कुशल हैं और परिवहन के साधन के रूप में पारंपरिक ट्रेनों के मुकाबले एक उत्कृष्ट विकल्प प्रदान करती हैं । डीजल इंजन की तुलना में इलेक्ट्रिक इंजन पर्यावरण के अनुकूल होता है, अतः विद्युतीकरण से दीर्घकाल में प्रकृति को लाभ होगा, लेकिन इस हरेभरे पेड़ों वाली सुरंग से यात्रा करने का अनुभव कई यात्रियों के लिए पुरानी यादें बनकर रह जाएगा।

सूचना बोर्ड (फोटो पी पी जनार्दन) नीलांबुर-शोरनूर रेल लाइन

रोशनी

स्वस्तिका कुमारी
लेखापरीक्षक
बही/मुख्यालय/चेन्नै

कैतुका लच्छी पंचायत के कैतुका लच्छी गांव, मकेर प्रखंड के सारण जिला, बिहार में एक लड़की का जन्म हुआ जिसके दोनों हाथ जन्म से ही नहीं थे । जब लड़की का जन्म हुआ तो सभी गाँव के लोग देखते हैं और उन्हें उसके माता-पिता पर तरस आता है, जिनके घर संतान के रूप में एक विकलांग बच्चा पैदा हुआ, उस विकलांग बच्ची का अस्तित्व परिवार के लिए भय और चिन्ता का कारण बन गया । माँ के लिए काफी दुःखदायी स्थिति थी, वह करे तो क्या करे। संतान के लिए पलक पांवड़े बिछाए उस दंपति को जब विकलांग बच्चा पैदा हुआ तो ऐसा लगा मानों उनकी जिंदगी से खुशी और उल्लास एकदम गायब हो गए और एक अव्यक्त उदासी और निष्क्रियता ने उन खुशियों का स्थान ले लिया। वह परिवार काफी गरीब था। गरीबी का चक्र और बच्ची के दोनों हाथ न होना किसी माँ-बाप के लिए वैसी स्थिति हो सकती है जहां से निकलने का कोई रास्ता न दिख रहा हो।

माँ-बाप धीरे-धीरे बच्ची का पालन-पोषण करते रहे । जब बच्ची थोड़ी बड़ी हुई, तब अपने आस-पास के बच्चों को स्कूल जाते देख उसकी भी इच्छा हुई कि वह स्कूल जाएगी। उसकी लगन को देखकर उसके माता-पिता ने उसका नज़दीक के सरकारी स्कूल में दाख़िला करवा दिया । उस लड़की ने स्कूल जाना शुरू तो कर दिया लेकिन उसके सामने अब एक नई समस्या थी, बच्ची लिखे कैसे?

अक्सर यह देखा गया है कि एक अंग यदि निशक्त है तो दूसरा अधिक सशक्त हो जाता है, जरूरत होती है उस दूसरे अंग को अधिक सचेष्ट, क्रियाशील व कार्यकौशल बनाने की । उसने अपने पैर के अंगूठे को ही अपना हाथ बना लिया और पाँव से लिखना शुरू कर दिया। शुरूआत

में तो वह मजाक की पात्र बनी । आत्मविश्वास पैदा करने के बजाय, लोगों ने उसे हतोत्साहित करना शुरू कर दिया - सिर्फ इसलिए कि वह अलग तरह से सक्षम थी। लेकिन इन सभी समस्याओं से हार न मानते हुए धीरे-धीरे वह आगे बढ़ती चली, उसने दसवीं और फिर बारहवीं कक्षा की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की । प्रखर बुद्धि की वह लड़की, उसमें जज्बें की कोई कमी नहीं थी, वह अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करना चाहती थी, लेकिन यह संभव नहीं हो सका क्योंकि माता-पिता गरीब थे।

थोड़े प्रयास के बाद सरकार के द्वारा चलाए जा रहे सतत् जीविकोपार्जन योजना, जो गरीबों के लिए चल रही है, के तहत विकलांगता में उसका चयन हुआ और दुकान के लिए उसे 20,000 रूपए मिलें। उन पैसों से उसने एक किराने की दुकान खोली, जिसमें बाकी सामानों के अलावा कागज़ और कलम भी थे। सुबह वो समय से दुकान खोलती और दिन भर मेहनत और ईमानदारी से काम करती थी । उसकी मेहनत से वह दुकान चल पड़ी और उसे अच्छी आमदनी होने लगी । इस तरह वह लड़की अपने गरीब माता-पिता का सहारा बनी।

उस दुकान का जो भी हिसाब-किताब होता था, उसे वह अपने पांव के अंगूठे से ही लिखा करती थी, जिससे उसके हिसाब-किताब या लेनदेन में कहीं कोई गड़बड़ी नहीं होती थी। किसी भी व्यक्ति का जीवन उसकी विकलांगता से परिभाषित नहीं होता, वह बिल्कुल वैसे ही जीवन जी रही थी जैसे कोई अन्य व्यक्ति बिना किसी विकलांगता के अपना जीवन जीता है।

एक बार एक यात्रा के दौरान मेरा उस गांव में जाना हुआ था और तभी मेरी मुलाकात उस लड़की से हुई थी । जब उससे मेरी बात हुई, तो उसकी इच्छा जानकर मैं ये सोचने पर विवश हो गई की अगर आत्मबल हो तो कुछ भी किया जा सकता है, मिट्टी को भी सोना बनाया जा सकता है, उसमें विकलांगता कहीं बाधा नहीं बनती।

विकल्प मिलेंगे बहुत, मार्ग भटकाने के लिए,
संकल्प एक ही काफी है, मंज़िल तक जाने के लिए ।

पालक्काड़ किला

प्रदीप कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तिरुवनंतपुरम मंडल

पालक्काड़ किला दक्षिण भारत के सबसे बेहतरीन संरक्षित किलों में से एक है । यह किला एक पौराणिक सैनिक अड्डा था । इसे मैसूर नरेश हैदर अली द्वारा पुनर्निर्मित करवाया गया और 19वीं शताब्दी में टीपू सुल्तान द्वारा सुधार करवाये गए ।

अंतिम आंग्ल-मैसूर युद्ध और टीपू सुल्तान की मृत्यु के बाद यह किला ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया । अंग्रेजों ने इसे पालक्काड़ तालुका मुख्यालय के रुप उपयोग किया ।

वर्तमान में इस किले के अंदर एक उप-जेल और कार्यालय है ।

ये किला एक खाई से घिरा है और समानांतर जॉगिंग के लिए मैदान है । यह किला खूबसूरत फूलों, पौधों और पेड़ों से सुसज्जित है ।

पालक्काड़ किले के प्रवेश द्वार पर एक हनुमान मंदिर है । ऐसा माना जाता है कि मैसूर राज्य के सैनिक युद्ध से पहले और बाद में आंजनेय पूजा किया करते थे ।

किले के पास वाटिका, किला मैदान और खुला सभागार भी है , इसका हवाई-चित्र बहुत मनोरम है ।

पालक्काड़ जंक्शन से किले की दूरी 5 किमी है ।

प्रयास करो तमाशा मत देखो

मनीष कुमार
डी.ई.ओ.
रेलवे विद्युतीकरण/चेन्नै

एक गाँव में आग लग गई । आग बढ़ती जा रही थी और गाँव वाले अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे और कुछ लोग फोन से वीडियो बनाने में लगे थे । एक चिड़िया ने वह दृश्य देखा और अपनी चोंच में पानी भरकर आग बुझाने का प्रयास करने लगी । वो बार-बार अपनी चोंच में पानी लाती और आग पर पानी डालती । जब गाँव वालों ने चिड़िया को आग पर पानी डालते देखा तो उनमें भी जोश आ गया और बोले कि अगर ये चिड़िया प्रयास कर रही है तो हम क्यों नहीं कर सकते । सब ने प्रयास किया और आग बुझ गई । ये सारी घटना एक कौआ देख रहा था, उसने चिड़िया से कहा कि तेरे पानी डालने से कुछ होना तो था नहीं, फिर तू क्यों ये सब कर रही थी ? चिड़िया बोली, मेरे पानी डालने से कुछ हुआ तो नहीं लेकिन मुझे गर्व है कि जब भी इस आग दुर्घटना की बात होगी तो मेरी गिनती आग बुझाने वालों में होगी, तेरी तरह तमाशा देखने वालों में नहीं ।

हौले-हौले ज़िन्दगी

निखिल चौहान
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
पालक्काड़ मंडल

मैं डरता था जिंदगी में कुछ नया करने से

उसका परिणाम सुनने से,

परिणाम, कि दुनिया से मिलने की इस हड़बड़ाहट में

लगभग खुद को खो दिया,

पर इन दिनों बदलने की एक चाह सी दिल में जाग गई है ।

एक नई उमंग जैसे कि वापस आ गई है,

फिर से दिन रोशन और रातें चाँदनी लगने लगी हैं ।

लोगों की बातें सुहावनी लगने लगीं हैं,

उम्मीद करता हूँ, ये भ्रम न हो ।

लगता है की खुशियाँ लौटकर दरवाजे पे आ गई हैं ।

समझनी है जिंदगी तो पीछे देखो, और अगर जीनी है जिंदगी तो आगे देखो...

बिहार

अविरल कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
सवारी डिब्बा कारखाना/फर

राजा कर्ण की निष्प्रभ जहां बीती है, अंग देश के रग-रग में संस्कृति बसी है,
ऐसा प्रदेश शानदार हूँ, देखो वह मैं बिहार हूँ।
गंगा की गोद में लहराता हूँ, महादेव के गुण गाता हूँ,
इस खंड के किसानों का अरमान हूँ, वो रसिक प्रसिद्ध बिहार महान हूँ ।
गुरु गोविंद सिंह का उपदेश हूँ , महावीर का संदेश हूँ
बुद्ध का विहार हूँ, आपका बिहार हूँ।
चाणक्य का अभिमान हूँ, बड़ों का स्वाभिमान हूँ
वीर कुंवर सिंह का स्थान हूँ, बुलंद हौसलों का बिहार हूँ ।

कायरता का नाशक हूँ, अशोक जैसा अडिग शासक हूँ,
शीतल सुबह का निहार हूँ , चहकते बचपनों का बिहार हूँ ।
तिलकामांझी सा साहस हूँ , आदिवासियों का जन नायक हूँ
वीर सेनाओं की कभी न देखी हुई हार हूँ , कुर्बानियों का बिहार हूँ ।

नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा हूँ,
गुरु और संतों की दीक्षा हूँ,
महाकाव्य में उल्लिखित मगध साम्राज्य हूँ
जी हां, आपका बिहार राज्य हूँ ।

अगर आप सफल होना चाहते हो तो आपको अपने काम में एकाग्रता लानी होगी ।

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप

प्रिंस अग्रवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यशाला/पेरंबूर

भारतवर्ष के इतिहास में, कुछ गौरवशाली होनेवाला था,
जन्म लिया एक युगपुरुष ने, पल वह बड़ा निराला था।
गर्व करें ये धरती जिस पर, ऐसा वह मतवाला था,
प्रणाम करें उस युगपुरुष को, वह महाराणा हिम्मतवाला था।
दुश्मन न जिस पर पा सके विजय, वह तेजस्वी प्रताप उजाला था,
हुंकार भर मेवाड़ से, दिल्ली लोहा ले डाला था।
परेशान हो गया अकबर भी क्योंकि, पड़ा शेर से पाला था,
जख़्म सहूं पर कलंक नही, महाराणा वह रणवाला था ।
हल्दीघाटी के भयंकर युद्ध में, बहा खून का नाला था,
क्या बहलोल, क्या मानसिंह, क्या सुल्तान मुगलों वाला था।
देशभक्ति, बलिदान था खून में, हाथों में सुंदर भाला था,
भक्त वह मेवाड़ राजा एकलिंगजी का, चेतक सवारी वाला था।
स्वाभिमानी मेवाड़ पर, आक्रांताओं का साया टाला था,
प्रणाम करें उस युगपुरुष को, वह महाराणा रखवाला था

सपनों की उड़ान

राजदीप सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
स्थापना एवं व्यय/मुख्यालय/चेन्नै

फ़र्श से अर्श तक पहुँचने का रखो संकल्प,
यह रास्ता तैयार है , बस आत्मविश्वास की पुकार है ।
सपनों के आकाश में उड़ जाने को ,
बस हौसलों के पंख ही तो चाहिये,
इस दुनिया में नाम बनाने को ।
कदम चलते रहेंगे , जब तक श्वास है
सफलता एक दिन ज़रूर मिलेगी, बस इस पर विश्वास है ।
नींद-चैन का त्याग करेंगे , दिन-रात को एक करेंगे
इस पागलपन को आदत बनाना है
इस दुनिया में नाम बनाने को ।
परिस्थिति जितनी ही ख़राब हो
कभी डरना मत
बस लड़ते रहो इनसे, कभी झुकना मत ।
ख्वाबों को याद रखो , हमेशा रहो तैयार
वह दिन दूर नहीं, जब सब सपने होंगे साकार ।

स्क्रीन पर उँगलियाँ चलाते-चलाते ...

गौरव वत्स
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
सवारी डिब्बा कारखाना /शेल

स्क्रीन पर उँगलियाँ चलाते-चलाते जब थक जाता हूँ ,
तो छत की तरफ देखता हूँ , उस पर बैठे कबूतर को देखता हूँ ,
उसकी उन्मुक्त उड़ान को देखता हूँ ।
सुबह जब उठते ही सारे ऐप खोलकर देख लेता हूँ,
तो फिर अपनी दुनिया को खोलता हूँ, अपने आप को देखता हूँ,
नेटफ्लिक्स और प्राइम की दुनिया से जब पूरी तरह ऊब जाता हूँ ,
तो फिर किताबों की तरफ देखता हूँ, कहानियों की तरफ देखता हूँ,
किरदारों की तरफ देखता हूँ ।
टीवी पर, मोबाइल पर, लैपटॉप पर, जब सबकुछ देख लेता हूँ,
तो फिर लोगों की तरफ देखता हूँ , रिश्तों की तरफ देखता हूँ,
सपनों की तरफ देखता हूँ, अपनों के तरफ देखता हूँ ।
गैर ज़रूरी इतनी सारी चीज़ें देख लेता हूँ, सुन लेता हूँ, सोच लेता हूँ,
कि फिर और कुछ नहीं सोचता,
बस रेत सी फिसलती ज़िन्दगी को देखता हूँ,
कई अधूरे कामों को देखता हूँ, खुद से किये वादों को देखता हूँ,
और स्क्रीन पर उँगलियाँ दौड़ाते, बस यूहीं देखता रहता हूँ...

"कोई काम शुरू करने से पहले स्वयं से तीन प्रश्न कीजिए मैं यह क्यों कर रहा हूं इसके परिणाम क्या हो सकते हैं और क्या मुझे सफलता मिलेगी और जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर मिल जाए तभी आगे बढ़े"

संस्कृत और तमिल

आकाश चपराना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
सवारी डिब्बा कारखाना /शेल

संघर्ष नहीं, अब शांति चाहिए, भाषाओं के समन्वय की अब क्रांति चाहिए।
हमारी मातृभाषाओं का हर रिश्ता सुभाषित हो, तमिल और संस्कृत इतिहास का हर अक्षर परिभाषित हो ।

मैं आया हिंदी के आंचल से, जिस आंचल को संस्कृत ने है बसाया ,
प्राचीनतम भाषाओं की दौड़ में, शायद जिसने सबको चलना सिखाया ।
देव वाणी के नाम से सुसज्जित, और हर अक्षर में भगवान बसे ,
शिव के डमरू की गुंजन से, संस्कृत व्याकरण के तान कसे ।
संस्कृत से ही संस्कृति है, मनुष्य बसी प्रीति है ,
ब्रह्मा के मुख से निकला ॐ, वही सृष्टि की कृति है ।
आदिकवि वाल्मिकी ने संस्कृत भाषी रामायण में, विश्व को सिखलाई रामनीति ।
द्वापरयुग के वेदव्यास ने सनातन काल के लिए, दुनिया को दिखलाई कृष्ण की कूटनीति ।
संस्कृत के विराट आसमान में बाकी भाषाएं बस चाँद है ,
बाकी भाषाएं पुत्री है जिसकी, उसे अपनी बहन कहने पर तमिल को भी अभिमान है ।
विश्व में अगर किसी भाषा को भगवान कहा जाता है ,
तमिल को ही ये सम्मान यहाँ, हर तमिल-भाषी द्वारा दिया जाता है ।
कुछ बात तो है यहाँ के पानी में, कुछ बात है यहाँ की वाणी में ,
तमिल जिक्र तो आ जाता है, हर रोज किसी की राम कहानी में ।
भाषा नहीं एक विद्या है, जिसने देश की चेतना को मरने न दिया तनिक ,
भारत को जिनपर नाज़ रहे, ऐसे दिए हैं कई वैज्ञानिक ।
कभी कलाम, कभी रमण और कभी रामानुजन ,
देश के हर कोने में, इन्हें जानता है हर जन ।

सफल और असफल लोग अपनी क्षमताओं में बहुत भिन्न नहीं होते हैं ,वे अपनी क्षमता तक पहुँचने के लिए अपनी इच्छाओं में भिन्न होते हैं ।

माँ

रोहित बाकर
लेखापरीक्षक
यातायात लेखापरीक्षा/चेन्नै

जो गोद में उठाकर लोरी गाती है,
खुद से पहले खाना हमें खिलाती है वो माँ होती है।
जो हमें उँगली पकड़कर चलना सिखाती है,
हर मुसीबत से हमें लड़ना सिखाती है वो माँ होती है।
जो हमें इस दुनिया में पहचान देती है,
हमारे सपनों को ऊँची उड़ान देती हैवो माँ होती है। ,
जो हमारी खुशी में खुश होती है,
हमारी तकलीफों में रो देती हैवो माँ होती है। ,
जो अपनी इच्छाओं को त्याग देती है,
हमारी इच्छाओं को पूरा कर देती हैवो माँ होती है। ,
जो हमारी खामोशी को हमसे बेहतर समझती है,
अपना दर्द छुपाकर हमारे लिए हँसती हैवो माँ होती है। ,
जो हमारी आहट से हमें पहचान लेती है,
बिना बताए हमारी परेशानियाँ जान लेती हैवो माँ होती है। ,
जो हमारे लिए दुनिया से लड़ जाती है,
हम पर आने वाले दुखों के आगे पहाड़ जैसे अड़ जाती हैवो माँ होती है। ,
ये दुनिया पूछती है कि कितना कमाते हो,
पर जो ये पूछे कि कितना खाते होवो माँ होती है। ,

पिता

आशीष मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
यातायात लेखापरीक्षा/चेन्नै

यह किस्सा सन् 2000 का है और अस्पताल से शुरू होता है, जब मेरी पहली सांस भी नहीं आई और उनकी धड़कन तेज हो चुकी थी, मेरे रोने से पहले उनकी आँखों में आँसू आ गए थे । हाँ हाँ मुझे पता है, मैं नहीं था। फिर भी देखने वाले कहते हैं, उनके चेहरे की चमक दोगुनी थी। चमक के साथ-साथ कंधों पर एक जिम्मेदारी भी महसूस हो गई जो आज हमें इस मुकाम पर पहुँचाकर भी उनको पूरी नहीं लगती। वो ऐसे है कि अपनी जवानी के दिन, मुझे बनाने में निकाल दिए। अपनी कुछ चंद पैसों की सैलेरी में उस समय में कम्प्यूटर भी दिलवा दिए । वैसे तो हम उस घर से है जहाँ पेट्रोल बचाने के लिए गाड़ी से न जाकर बस/ट्रेन से सफर करते थे पर हमें वो सबसे अच्छे स्कूल में पढ़ाते थे।

अब शायद आपको पता चल गया हो मैं किसकी बात कर रहा हूँ। जो अपनी बात को जुबान तक नहीं आने देते, अपनी जरूरतों को मारकर हमारी इच्छा पूरी करने में लग जाते है।

हाँ, "पिता" मैं पिता नाम के शख्स की बात कर रहा हूँ।

हिन्दी दिवस विशेष

संविधान सभा द्वारा लम्बी चर्चा के बाद 14 सितम्बर सन् 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकारा गया। इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
2024 में हिंदी दिवस का विषय है-"हिंदी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक"

मैं भारत की नारी

आरती कुमारी भांखड़ीवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
निर्माण/एगमोर एवं एमटीपी

मैं भारत की नारी हूँ, भारत का स्वाभिमान हूँ ।

आन बान शान की मर्यादा, भारत का गौरवगान हूँ

मैं अबला नहीं, सबला हूँ, मैं लक्ष्मी सरस्वती दुर्गा हूँ ।

मैं माँ बहन बेटी हूँ, मैं सृष्टि की संचालक हूँ ।

मैं वंश वृद्धि का आधार हूँ, हर पुरुष के घर नार हूँ ।

हरि को भी गोदी खिलाया, मैं ईश्वर का अवतार हूँ ।

मैं आदि हूँ, मैं अंत हूँ, मैं पालक रक्षक भक्षक हूँ ।

मैं त्यागी तपस्वी वैरागी, मैं हर सुख दुःख में साथ हूँ ।

बस प्यार, प्रेम, सम्मान की आशा, नाथ आपसे चाहती हूँ ।

जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक हैं।

हमारा भारत

सुनील कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
निर्माण/एर्णाकुलम

अखंडता की नींव है भारत,
विविधताओं की धरती है भारत,
संस्कृतियों का उद्गम है भारत ।
नहीं थी जब सभ्यताएं कहीं भी,
हड़प्पा की बुनियाद था भारत ।
नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों से अलंकृत था भारत,
पूरे विश्व का शिक्षा केन्द्र था भारत ।
विद्वानों, वैज्ञानिकों और महापुरूषों से पूर्ण हैं भारत ।
विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है भारत ।
जब सभी परेशान थे कोरोना से ,
वैक्सीन देकर सभी को संभाले था भारत ।
जब सब धरती पर पांव जमाना सीख रहे थे,
हम चांद पर अपना तिरंगा लहरा रहे थे ।
जब सारे देश की लड़खड़ा रही थी आर्थिक वृद्धि,
दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन रहा था भारत ।
जब लड़ रहे है सारे देश एक-दूसरे से ,
दुनिया को शांति का पाठ पढ़ा रहा है भारत,
और वसुधैव कुटुम्बकम् का नारा लगा रहा है भारत ।
हमें नाज़ है इस भारत भूमि पर, जो अनेक सुश्रुत और आर्यभट्ट बना रही है
हमें गर्व है कि हम जन्में, इस भारत भूमि पर ।

सफलता के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति की असफलता से मुलाकात निश्चित है,ऐसे में हार के डर से कभी जीत के प्रयास को नहीं छोड़ना चाहिए। सफलता कभी भी सपने देखने भर से नहीं मिलती है, बल्कि उन सपनों को साकार करने के लिए की जाने वाली सही दिशा में की गई मेहनत और प्रयास से मिलती है।

माँ

रविषेक कुमार तेजस
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
यातायात लेखापरीक्षा / चेन्नै

भगवान का दूसरा रूप है माँ
उनके लिये दे देंगे जान
हमको मिलता जीवन उनसे,
कदमों में है स्वर्ग बसा,
संस्कार वह हमें सिखलाती,
अच्छा-बुरा हमें बतलाती,
हमारी गलतियों को सुधारती,
प्यार वह हम पर बरसाती,
तबीयत अगर हो जाये खराब,
रात-रात भर वह जागती,
माँ बिन जीवन है अधूरा,
खाली-खाली सूना-सूना,
खाना पहले हमें खिलाती,
बाद में वह खुद है खाती,
हमारी खुशी में खुश हो जाती,
दुःख में हमारे आँसू बहाती,
इस जग में सबसे प्यारी है माँ ।

कभी सपने देखना बंद न करें, कभी विश्वास करना बंद न करें, कभी हार न मानें, कभी प्रयास करना बंद न करें, और कभी सीखना बंद न करें।

माँ

जितेन्द्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
आईटी ऑडिट सेल/मुख्यालय

माँ और माँ का प्यार निराला ,
उसने ही है मुझे सम्भाला ।
मेरी मम्मी बड़ी प्यारी ,
मेरी मम्मी बड़ी निराली ।
क्या मैं उनकी बात बताऊं ,
सोचूं ! उन्हे कैसे जान पाऊँ ।
सुबह सवेरे मुझे उठाती ,
कृष्ण कह कर मुझे जगाती ।
जल्दी से तैयार मैं होता ,
उनके कारण स्कूल जा पाता ।
आते ही मैं खुश हो जाता ,
जब मम्मी का चेहरा दिखता ।
पौष्टिक भोजन मुझे खिलाती ,
गृह कार्य भी पूरा करवाती ।
मुझ पर गुस्सा जब है आता ,
दो मिनट मे उड़ भी जाता ।
मेरी मम्मी मेरी जान ,
रखती मेरा पूरा ध्यान ।
माँ और माँ का प्यार निराला ,
उसने ही है मुझे सम्भाला ।

माँ की गोद में छिपा है सारा जहां, वहाँ सुकून मिलता है और मन हमेशा आनंदित रहता है।

बेटे की विदाई

रोहित राज
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
मदुरै मंडल

कौन कहता है कि विदाई केवल बेटियों की होती है, हम बेटों की भी विदाई होती है । अपने नाम का नियुक्ति पत्र पोस्टमैन से प्राप्त होते ही, खुद की विदाई का पैगाम प्राप्त हो जाता है । माँ, बाप तथा पूरा परिवार विदाई की तैयारी में लग जाते हैं । सभी लोग सुनिश्चित करते है कि कोई आवश्यक वस्तु या दस्तावेज छूट न जायें । लेकिन बेटे को अपना परिवार, शहर, गलियां, त्यौहार आदि दूर जाते हुए प्रतीत होने लगते हैं । विदाई के पहले वाली रात बेचैनियों का समंदर लेकर आती है । मन में यह भी खुशी होती है कि माँ बाप को अपने बेरोजगारी के दर्द से बाहर ले आया हूँ तथा यह भी डर होता है कि पता नहीं नया शहर कितनी चुनौतियों को साथ लेकर आएगा । विदाई के दिन जब ट्रेन अपने शहर को छोड़ते हुए आगे बढ़ती है तो मन में एक भारीपन के साथ अचानक जिम्मेदारियों का सैलाब नजर आने लगता हैं । जैसे जैसे ट्रेन आगे बढ़ती है, अपने जिले की सीमा पार हो जाने के बाद, गंतव्य स्थान आकर्षित करने लगता है । अंत मे, मैं यही कहना चाहूँगा, हम बेटे है जनाब, हर तरह से ढल जाते हैं, दूर रहकर भी जिम्मेदारियाँ निभाना आता हैं ।

हृदय में जब क्षुद्र स्वार्थ समाप्त हो जाता है तो वहीं से मनुष्यता का आरंभ होता है ।

भारत रत्न (2024)

रोहित राज
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
मदुरै मंडल

डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन

स्वामीनाथन जी का कृषि और किसानों के कल्याण में उल्लेखनीय योगदान रहा है । उन्हें हरित क्रांति का जनक कहा जाता है । उन्होनें चुनौतीपूर्ण समय में भारत को कृषि में आत्मनिर्भरता हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । उन्होनें भारतीय कृषि को आधुनिक बनाने में उत्कृष्ट प्रयास किए । भारत की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित भी किया । उन्हें संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा "आर्थिक पारिस्थितिकी" के जनक के रूप में भी मान्यता दी गई थी । 1971 में रैमन मैग्सेसे पुरस्कार और 1987 में प्रथम विश्व खाद्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

चौधरी चरण सिंह

इन्होने किसानों के अधिकार और उनके कल्याण के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया । अपने जीवनकाल में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री, देश के गृहमंत्री और प्रधानमंत्री रहे। स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजी शासन की नाक में दम किया था । उन्हें ईमानदारी के लिए जाना जाता था । उन्हे अपने प्रशासन में अक्षमता, भाई-भतीजावाद एवं भ्रष्टाचार बिल्कुल बर्दाश्त नही था । वह एक प्रतिभाशाली सांसद थे तथा अपने वाक्पटुता व दृढ़विश्वास के लिए जाने जाते थे । उन्होने अत्यन्त साधारण जीवन व्यतीत किया और अपने खाली समय में पढ़ने और लिखने का काम करते थे ।

लालकृष्ण आडवाणी

अपने समय के सबसे सम्मानित राजनेता थे । भारत के विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय है । उनका जीवन ज़मीनी स्तर पर काम करने से शुरू होकर, हमारे देश के सूचना एवं प्रसारण मंत्री, गृहमंत्री और उपप्रधानमंत्री तक विस्तारित है । उन्होने राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक

पुनरुत्थान को आगे बढ़ाने की दिशा में अद्वितीय प्रयास किए हैं । 1990 में आडवाणी जी ने गुजरात के सोमनाथ से लेकर अयोध्या तक की रथयात्रा शुरू की थी । उन्हे भारतीय जनता पार्टी का 'भीष्म पितामह' कहा जाता है ।

पी.वी. नरसिम्हा राव

यह एक प्रतिष्ठित विद्वान और राजनेता थे । ये आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे और बाद में देश के प्रधानमंत्री बने । उनका दूरदर्शी नेतृत्व भारत को आर्थिक रूप से उन्नत बनाने, देश की समृद्धि और विकास के लिए एक ठोस नींव रखने मे सहायक था । प्रधानमंत्री के कार्यकाल के दौरान भारत को वैश्विक बाज़ार के लिए खोल दिया गया, जिससे आर्थिक विकास का नया युग आरंभ हुआ । भारत की विदेश नीति, भाषा और शिक्षा क्षेत्रों को काफी बढ़ावा मिला । उन्होनें देश की कमान काफी मुश्किल समय में संभाली थी, उस समय भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार चिन्ताजनक स्तर पर था । उन्होने देश को आर्थिक भंवर से बाहर निकाला । उन्होने भारत की "लुक ईस्ट" नीति की शुरूआत की जिसने भारत को दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन के साथ बेहतर निकटता में ला दिया ।

कर्पूरी ठाकुर

कर्पूरी ठाकुर एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे, जो दो बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे । एक छात्र कार्यकर्ता के रूप में, उन्होने भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने के लिए अपना स्नातक अधूरा छोड़ दिया । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए 26 महीने जेल में बिताए । भारत को आज़ादी मिलने के बाद, उन्होने शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया । बाद में बिहार विधानसभा के सदस्य बने । मज़दूरों एवं सरकारी कर्मचारियों के हित में आमरण अनशन किया और गिरफ्तारी भी हुई । वे हिन्दी के समर्थक थे । बिहार के मुख्यमंत्री बनने के बाद , राज्य में पूर्ण शराबबंदी भी लागू की । उन्हे "जननायक" के नाम से पुकारा जाने लगा ।

"हक चाहों तो लड़ना सीखों,
क़दम-क़दम पर अड़ना सीखों,
जीना है तो मरना सीखों"

-कर्पुरी ठाकुर

गृहिणी

दामिनी नागरे
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
हिन्दी अनुभाग

हर रोज चेहरे पर चेहरा लगा के उठती हूँ ,
बीते कल की सारी बातें भुला के उठती हूँ ।

बहू हूँ, पत्नी हूँ और एक माँ हूँ ,
बस अब सिर्फ यही तो याद रहता है ।

ख्वाब सारे अपने हर रोज,
सिरहाने तले दबा के उठती हूँ ।

वो सारी ख्वाहिशें जो दिल में हैं,
उन्हें दिल में ही दफन करके रखती हूँ ।

खुद को भूल के दिनभर की दौड़ धूप,
और वो भी बिन पगार की ।

तुम करती ही क्या हो दिनभर,
अक्सर यह ताने सुना करती हूँ ।

तुम सिर्फ एक गृहिणी हो ,
रोज ये तमगा लगा के उठती हूँ ।

जी हाँ , मैं एक गृहिणी हूँ ,
जिसका ये गृह ऋणी है ।

"अगर आप राजमार्ग नहीं बन सकते तो बस एक पगडंडी बन जाइए। अगर आप सूरज नहीं बन सकते तो सितारा बन जाइए, क्योंकि जीत या हार का मतलब आकार नहीं है। आप जो भी हैं , उसमें सर्वश्रेष्ठ बनें।"

सेवानिवृत्ति

श्री सि. सुरेश, आईएएएस (बैच 2013) ने निदेशक लेखापरीक्षा के रूप में 7 जून 2021 पूर्वा. को कार्यभार संभाला ।

अक्टूबर 1987 के दौरान श्री सि. सुरेश अनुभाग अधिकारी के रूप में भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में शामिल हुए और रैंकों में ऊपर उठते हुए वे आईएएएस में शामिल हुए । कई राज्यों और केंद्र सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का ऑडिट करने का अनुभव रखते हैं । उनके द्वारा लेखापरीक्षित किये गए उद्यम विविध प्रकृति के हैं - विनिर्माण, संचार, परिवहन, बुनियादी ढाँचा और कल्याणकारी गतिविधियाँ ।

वे चेन्नै मेट्रोपॉलिटन वॉटर सप्लाई एंड सीवरेज बोर्ड में प्रतिनियुक्ति पर थे तथा चार साल के संक्षिप्त कार्यकाल में उन्होंने उपवित्त नियंत्रक (आंतरिक लेखा परीक्षा) के रूप में कार्य किये । उन्हे इस अवधि में संतोष की भावना थी क्योंकि दावों पर प्रभावी नियंत्रण लगाया जा सकता था। इसके अलावा, कर्मचारियों के सेवा के उपरांत मिलने वाले लाभों का निष्पक्ष सत्यापन किया ।

कार्यालय द्वारा सेवानिवृत्ति पर अनंत शुभकामनाएं ।

सेवानिवृत्ति

श्री. एस. शिव सुब्रमणियन, आईएएएस (बैच 2014) ने 25 जुलाई 2022 (पूर्वा.) को निदेशक लेखापरीक्षा (का एवं भं) के रूप में कार्यभार संभाला है। दक्षिण रेलवे के अधीन निर्माण संगठन, रेलवे विद्युतीकरण और मपप, यातायात, कार्यशाला और भंडार तथा सवारी डिब्बा कारखाना (उत्पादन इकाई) निदेशक (का एवं भं) के लेखापरीक्षा क्षेत्राधिकार में हैं।

श्री. एस. शिव सुब्रमणियन, अक्टूबर 1987 में अनुभाग अधिकारी (वाणिज्यिक) के रूप में भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में शामिल हुए और कार्यालयीन पदों पर उन्नति प्राप्त करते हुए आईएएएस में शामिल हुए । उनके पास राज्य सरकार के विभागों और राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (एसपीएसयू) के लेखापरीक्षा का अनुभव है । लेखापरीक्षित एसपीएसयू विभिन्न प्रकार के हैं - विनिर्माण, संचार, परिवहन, और बुनियादी ढांचा और कल्याणकारी गतिविधियों के लेखापरीक्षा के अनुभव है । वह संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय (संयुक्त राष्ट्र की शैक्षणिक और अनुसंधान शाखा), टोक्यो, जापान के लेखापरीक्षा से जुडे थे।

कार्यालय द्वारा सेवानिवृत्ति पर अनंत शुभकामनाएं ।

सेवानिवृत्ति

इस कार्यालय के निम्नलिखित पदधारी अपने कार्यालयीन दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत्त / स्वैच्छिक सेवानिवृत्त हुए हैं । इस कार्यालय की ओर से उनके स्वस्थ एवं आनंदमयी जीवन की कामना करते हैं ।

क्र.सं	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति/ स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की दिनाँक
1.	श्री एम आर रमेश	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/10/2023
2.	श्रीमती जी गोमती	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31/12/2023
3.	श्रीमती एन वेन्निला	लेखापरीक्षक	29/02/2024
4.	श्रीमती चित्रा रामस्वामी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	29/02/2024
5.	श्री आर गुरूवायुरप्पन	सहायक पर्यवेक्षक	29/02/2024
6.	श्री के बाबू	सहायक पर्यवेक्षक	29/02/2024
7.	श्री एन एस त्यागराजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/03/2024
8.	श्री एन विश्वनाथन	सहायक पर्यवेक्षक	31/03/2024
9.	श्रीमती अलमू मैकल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30/04/2024
10.	श्री बी जयशंकर	स्टेनो वर्ग-I	30/04/2024
11.	श्री जी मनोहरन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/05/2024
12.	श्री एस मुत्थुसामी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/05/2024
13.	श्री एस कासिअम्माल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31/05/2024
14.	श्री एस सजीव	लेखापरीक्षक	31/05/2024
15.	श्री एम सुब्रमणियन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30/06/2024
16.	श्री जी रमेश राजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30/06/2024

पदोन्नति

निम्नलिखित पदधारियों की पदोन्नति पर इस कार्यालय की ओर से उन्हें ढ़ेर सारी बधाईयां ।

क्र.सं	नाम	पदनाम
1.	श्रीमती सुभद्रा मोहन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
2.	श्री एस नागराजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
3.	श्री एस मुत्थुसामी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
4.	श्री सी श्रीधरन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
5.	श्रीमती जे. निर्मला	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
6.	श्री एस नारायणन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
7.	श्री फ्रांसिस अंथोनी मैकल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
8.	श्री डी सेल्वकुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
9.	श्री मगेश किशन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
10.	श्रीमती ए नसीरा बेगम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
11.	श्री अनुराग प्रताप सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
12.	श्री के गोपालकृष्णन	वरिष्ठ निजी सचिव
13.	श्री पी रंजीत	लेखापरीक्षक
14.	श्री आर चंद्रूकुमार	लेखापरीक्षक
15.	श्री ओमप्रकाश	लिपिक
16.	श्री दीपक शर्मा	लिपिक
17.	श्री एस एडवर्ड टेनसिंह	सहायक पर्यवेक्षक
18.	श्री तमिलरसु	सहायक पर्यवेक्षक
19.	श्री एस रवीन्द्रन	सहायक पर्यवेक्षक
20.	श्रीमती गीता रामू	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
21.	श्री एम नागराजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
22.	श्री एस सेंथिलनाथन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
23.	श्री सी वी लक्ष्मणन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
24.	श्रीमती बी संगीता	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
25.	श्रीमती वी पी नीति	लिपिक
26.	श्रीमती उमा मगेश्वरी	लिपिक

नियुक्तियां

अक्टूबर 2023 से जून 2024 के दौरान नियुक्तियां...

निम्नलिखित पदधारियों की नियुक्ति पर इस कार्यालय की ओर से उन्हें ढ़ेर सारी बधाईयां ।

क्र. सं	नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम
1.	मीसाला सुधीर कुमार	लेखापरीक्षक
2.	विकाश कुमार	लेखापरीक्षक
3.	अभिषेक कुमार	लेखापरीक्षक
4.	विश्वजीत कुमार	लेखापरीक्षक
5.	स्वस्तिका कुमारी	लेखापरीक्षक
6.	मनीष चौधरी	लेखापरीक्षक
7.	अशोक कुमार	लेखापरीक्षक
8.	भुक्या हेमंत	लेखापरीक्षक
9.	प्रियांशु मीना	लेखापरीक्षक
10.	रोहित बाकर	लेखापरीक्षक
11.	गर्विता मिश्रा	लेखापरीक्षक
12.	तंगजापाऊ सुअंतक	लेखापरीक्षक
13.	आकाश चपराना	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
14.	आरती कुमारी भांखड़ीवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
15.	आशीष मीना	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
16.	चेतन गोचर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
17.	अविरल कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
18.	उपेन्द्र कुमार यादव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
19.	रोहित राज	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

20.	सौरव दत्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
21.	प्रिंस अग्रवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
22.	पारस	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
23.	चीडेला श्रीकर माधव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
24.	निखिल चौहान	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
25.	उज्ज्वल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
26.	अजय कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
27.	सर्बेश्वर माझी	लेखापरीक्षक
28.	राजदीप सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
29.	मयंक कुमार चौहान	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
30.	रविषेक कुमार तेजस	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
31.	जितेन्द्र	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
32.	हर्षल महेश्वरी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
33.	पंकज पाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
34.	विपिन कुमार शर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
35.	सुनील कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
36.	अनुज मुद्गिल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
37.	वी. वेंकटेश	लिपिक
38.	दामिनी नागरे	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

शब्दसंग्रह

sशब्द	अंग्रेजी अनुवाद	शब्द	अंग्रेजी अनुवाद
विनिधान	Allocation	अनुदान	Grant
प्रावधान	Provision	पंक्ति	Queue
अनुसमर्थन	Ratification	पुनर्विचार	Reconsideration
प्रतिपूर्ति	Recoupment	सहज बनाना	Work up
पत्राचार	correspondence	शोधन	Correction
विवर्जित	Debarred	घाटा	Deficit
प्रतिलिपिकार	Copyist	निगमित	Corporate
भत्ता	Allowance	निधि	Fund
परिशिष्ट	Appendix	पृष्ठ	Folio
नियुक्ति	Appointment	उपदान	Gratuity
शिक्षु	Apprentice	आधी छुट्टी	Half holiday
संवर्ग	Cadre	वृद्धि	Increment
नियम संहिता	Code of rules	क्षतिपूर्ति	Indemnify
बंधपत्र	Bond	मूल विचार	Key note
सीमाशुल्क	Custom duty	चूक	Lapse
ऋण	Debt	परिपक्वता	Maturity
प्रतिनिधि	Delegate	परिवीक्षण	Monitoring
मांगपत्र	Indent	नाम निर्देशन	Nomination
अनुलग्नक	Enclosure	अध्यादेश	Ordinance
पृष्ठांकन	Endorsement	वैकल्पिक	Optional
राजवित्तीय	Fiscal	देय	Payable

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (मेल सहित-ई)	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा,टंकण,आशुलिपि)	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ईपुस्तक-,डीवीडी/सीडी , पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय । हिंदी	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%
11.	वेबसाईट द्विभाषी हो	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%

13.	1.मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.)तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत) 2.मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण 3. विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	25%(न्यूनतम) 25%(न्यूनतम) वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण
(1.)	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	 वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)
(2.)	कोड ,फॉर्म ,मैनुअल , प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%
(3.)	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो ।	20%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।

राजभाषा वर्ष 2023-24 में हिन्दी कार्यान्वयन प्रगति रिपोर्ट

1. हिन्दी पत्राचार : राजभाषा विभाग के निदेशानुसार सभी क्षेत्रों के कार्यालयों के साथ हमारे कार्यालय में पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य 55 % है। रिपोर्ट वर्ष में क,ख एवं ग क्षेत्रों के कार्यालयों के साथ हिन्दी पत्राचार क्रमश: 69% रहा है।
2. टिप्पणी : राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हिन्दी में टिप्पणी लिखने के लिए निर्धारित लक्ष्य 30% है। जिसके सापेक्ष अनुभागों एवं इकाईयों से प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार गत वर्ष हिन्दी में लिखी गए टिप्पणियों का प्रतिशत 67% दर्ज किया गया।
3. हिन्दी कार्यशाला : राजभाषा विभाग के निदेशानुसार इस कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में एक कार्यशाला का आयोजन अपेक्षित है। अत: इस कार्यालय में वर्ष 2023-24 में कुल 5 कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिसमें कुल 46 अधिकारियों एवं 47 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
4. हिन्दी प्रशिक्षण : हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन इस कार्यालय से हिन्दी भाषा के लिए नियमित रुप से नामित किए जा रहे है।
5. निरीक्षण :वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार निरीक्षण लक्ष्य 25% है। इस कार्यालय में 28 एकक/अनुभाग है। जिसमें से 9 का निरीक्षण किया जा चुका है।
6. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक : राजभाषा विभाग के निदेशानुसार गत वर्ष प्रत्येक तिमाही में एक बैठक का आयोजन किया गया। इस प्रकार वर्ष में कुल चार बैठकें आयोजित की गई, जिसमें सभी एकक के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी उपस्थित हुए एवं एकक/अनुभागों के राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर चर्चा की गई।
7. हिन्दी दिवस एवं हिन्दी सप्ताह का आयोजन : इस वर्ष हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आरंभ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के साथ भारत मंडपम, नई दिल्ली में 14 एवं 15 सितंबर में हुआ। इस कार्यालय में 14 से 28 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कई तरह की प्रतियोगिताओं जैसे शब्दावली एवं टिप्पण लेखन, अनुवाद, अंत्याक्षरी, प्रश्नोत्तरी, स्मृति लेखन, कहानी लेखन, वार्तालाप आदि का भी आयोजन हुआ।
8. वार्षिक गृह पत्रिका दक्षिणी का प्रकाशन : वार्षिक ई-गृह पत्रिका दक्षिणी 2023 का प्रकाशन किया गया ।

स्टीफन हॉकिंग

मशहूर व महान वैज्ञानिकों में से एक स्टीफन हॉकिंग किसी भी पहचान के मोहताज़ नहीं है। उन्होंने अपनी काबिलियत के बल पर दुनिया को गौरवान्वित होने के कई अवसर दिए हैं। अपनी शारीरिक परेशानियों के बावजूद उन्होंने ऐसे काम किए, जिसकी लोग बस कल्पना ही कर सकते हैं।

स्टीफन हॉकिंग का जन्म इंग्लैंड में 8 जनवरी 1942 को हुआ था। स्टीफन के पिता फ्रेंक और माता का नाम इसोबेल था। अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद स्टीफन ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भौतिकी विषय पर अध्ययन किया। साल 1962 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में डिपार्टमेंट ऑफ एप्लाइड मैथेमैटिक्स एंड थ्योरिटिकल फिजिक्स पर रिसर्च की। शिक्षा के बल पर ही स्टीफन हॉकिंग ने इतनी ख्याति प्राप्त की।1963 में 21 वर्षीय स्टीफन हॉकिंग की सेहत बिगड़ने लगी, जांच में पाया गया कि स्टीफन को एमियोट्रोफिक लेटरल स्क्लेरोसिस amyotrophic lateral sclerosis (ALS) नामक बीमारी है। इस बीमारी के कारण शरीर के हिस्से धीरे धीरे काम करना बंद कर देते है । तब स्टीफन कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई कर रहे थे। लेकिन उन्होंने इस बीमारी को अपने सपनों के बीच आने नहीं दिया। बीमार होने के बावजूद भी उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की।

स्टीफन हॉकिंग के पास 13 डिग्रियां थीं। स्टीफन हॉकिंग ने कई किताबें लिखी थीं जैसै ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम, द यूनिवर्स इन ए नटशेल, द ग्रैंड डिज़ाइन, ब्लैक होल और बेबी यूनिवर्स, जॉर्ज और द बिग बैंग आदि ।

2014 में हॉकिंग पर एक फिल्म बनाई गई , जिसका नाम "द थ्योरी ऑफ एवरीथिंग" है। इस फिल्म में उनकी जिंदगी के संघर्ष को दिखाया गया है और बताया गया है कि किस तरह से उन्होंने अपने सपनों को पूरा किया ।

वे सदी के एक महान वैज्ञानिक थे ।

स्टीफन हॉकिंग का निधन 14 मार्च 2018 को 76 वर्ष की आयु में हुआ था ।

हिंदी गृह पत्रिका दक्षिणी, 2023 को लोकार्पण करते हुए महानिदेशक लेखापरीक्षा

तिरुवनंतपुरम में आयोजित कार्यशाला

पालक्काड मंडल में आयोजित हिंदी कार्यशाला

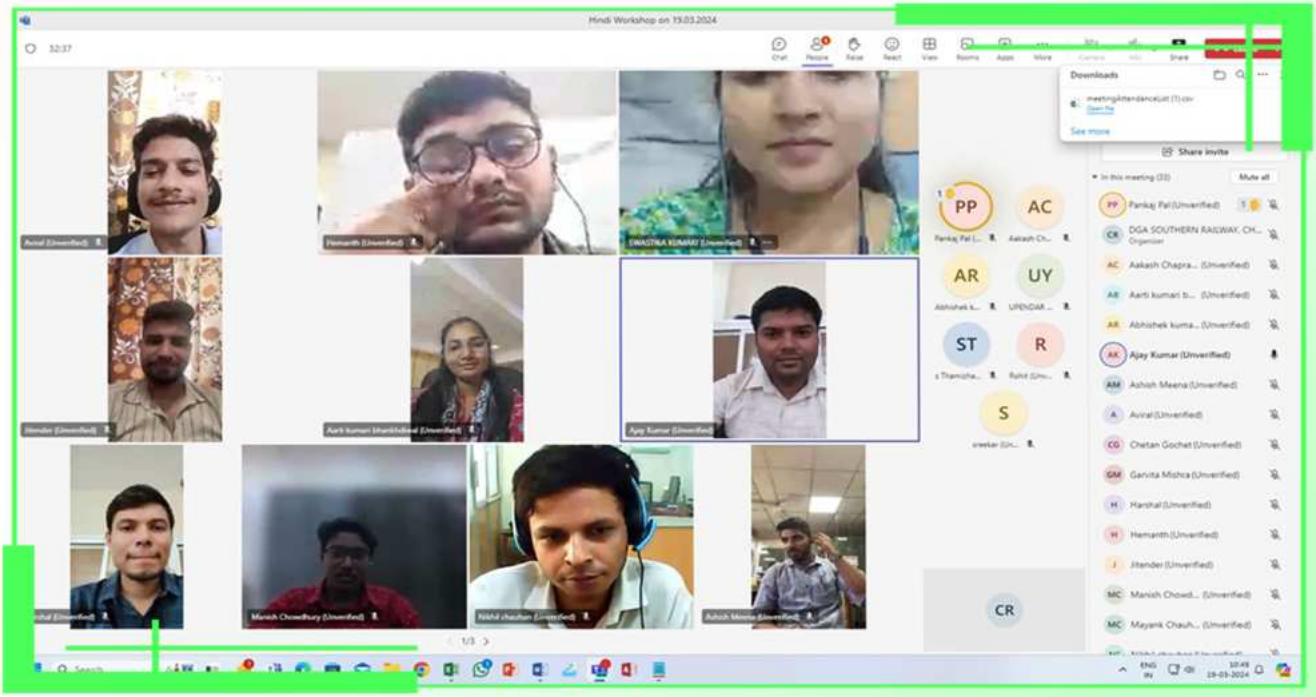

नवनियुक्त पदधारियों के लिए आयोजित आनलाइन हिंदी कार्यशाला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में चेन्नै के सरकारी कार्यालयों के राजभाषा कर्मचारियों के लिए आयोजित अंत्याक्षरी प्रतियोगिता में इस कार्यालय के श्रीमती जी. वी. सूर्यप्रभा, हिंदी अधिकारी एवं सुश्री प्रीति साव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के दल को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में चेन्नै के सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए आयोजित वार्तालाप प्रतियोगिता में इस कार्यालय के श्री ई चंद्रशेखरन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्रीमती रोजा प्रेमकुमार , लेखापरीक्षक के दल को प्रेरणा पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।

PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
SOUTHERN RAILWAY CHENNAI-3

PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
SOUTHERN RAILWAY CHENNAI-3

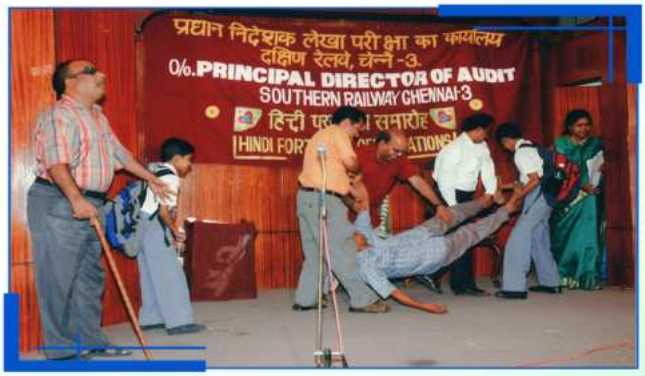
PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
SOUTHERN RAILWAY CHENNAI-3

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय
दक्षिण रेलवे, चेन्नै -3.
PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
SOUTHERN RAILWAY CHENNAI-3
हिन्दी पखवाडा समारोह

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का
दक्षिण रेलवे, चेन्नै -3.
PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
SOUTHERN RAILWAY CHENNAI-3

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय
PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय
दक्षिण रेलवे, चेन्नै -3.

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय: दक्षिण रेलवे: चेन्नै-3
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT:S.RLY:CHENNAI-3
हिन्दी "पखवाड़ा" समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATIONS
सितंबर
SEPTEMBER

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय: दक्षिण रेलवे: चेन्नै-3
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT:S.RLY:CHENNAI-3
हिन्दी "पखवाड़ा" समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATIONS
सितंबर
SEPTEMBER

गणतंत्र दिवस, 2024 समारोह में श्री एन एस त्यागराजन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/निर्माण तिरुच्ची व मदुरै, श्री एम सुब्रमणियनवरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/व्यय व प्रशिक्षण, को कार्यालय की ओर से उनकी उत्कृष्ट कार्यालयीन सेवा के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया ।

ऑडिट सप्ताह समारोह 2023 के उपलक्ष्य में आयोजित साइकिल रैली में भाग लिए पदधारी

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2024 में श्रीमती निर्मला जे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन, व श्री सी. श्रीधरन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/आईटीएसी को कार्यालय की ओर से उनकी उत्कृष्ठ कार्यालयीन सेवा के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया ।

प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद नव नियुक्त सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के साथ महानिदेशक लेखापरीक्षा

प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद नव नियुक्त लेखापरीक्षकों के साथ महानिदेशक लेखापरीक्षा

महानिदेशक लेखापरीक्षा के साथ श्री एम एच कल्वत सैयद अब्दुल खादर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सिकंदराबाद में नवम्बर, 2023 के दौरान आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग - दक्षिण जोन के विजेयता

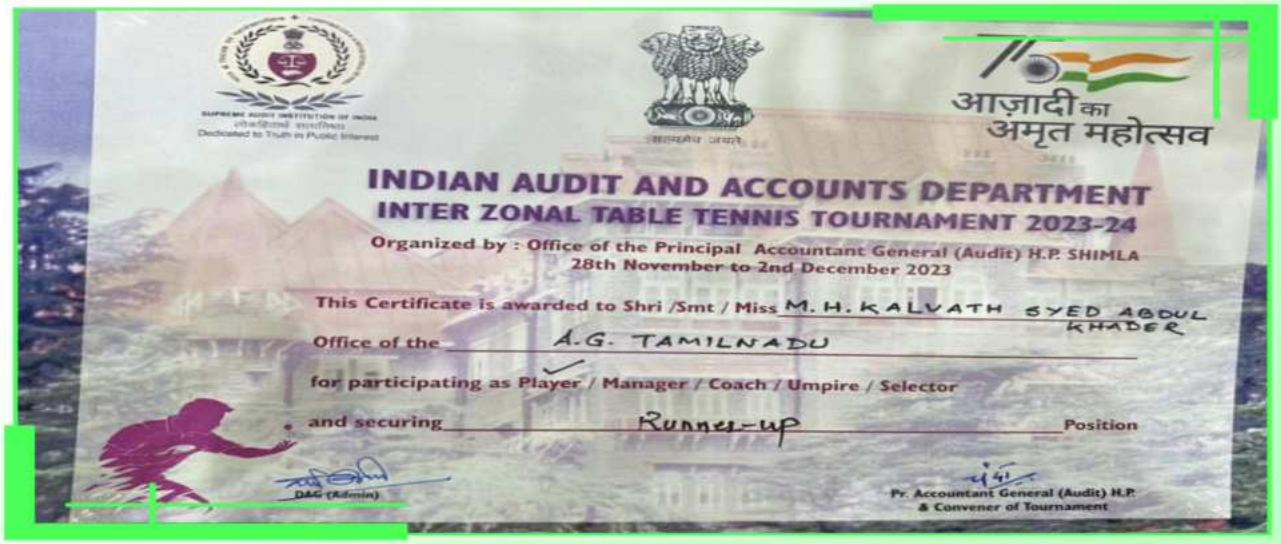

शिमला में दिसम्बर, 2023 के दौरान आयोजित इंटर ज़ोनल टेबल टेनिस टूर्नामेंट में रनर-अप खिताब

स्टीफन हॉकिंग का चित्रांकन एस. निर्मल पुत्र श्री डी. श्रीवेंकटेशन,वरिष्ठ लेखापरीक्षक/प्रशासन

2024

दक्षिणी